Anarchism

Anarchism शब्द ग्रीक भाषा के Anarchia शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है "Absence of Rule". अर्थात् बुराई की दूरी से अराजकतावाद एक ऐसी विचारधारा है जिसका उद्देश्य राज्य रहित समाज की स्थापना करना है। जिस प्रकार साम्यवादियों का प्रत्यक्ष शत्रु राज्य है। व्यक्तिवादियों की तरह वे न तो राज्य के कार्य क्षेत्र को सीमित कर देना चाहते हैं और नहीं साम्यवादियों की तरह राज्य को तत्कालीन संक्रमणकाल के लिए रखना चाहते हैं। उनका प्रमुख उद्देश्य तो राज्य को जड़-मूल से उखाड़ फेंकना है। अतएव उद्देश्य से तो यह कहना गलत न होगा कि "Where Communism ends, Anarchism begins." वास्तविकता तो यह है कि अराजकतावादी केवल राज्य का ही विरोध नहीं करते, बल्कि वे किसी भी प्रकार के अधिकार सत्ता राज्य की हो, या व्यक्तिगत सम्पत्ति की हो या धर्म की हो। उन सभी प्रकार की सत्ताओं को समाप्त करके अराजकतावादी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं, जिसमें मानव अपने स्वभाव के अनुसार स्वेच्छा एवं सहयोग के आधार पर तथा पूर्ण स्वतंत्रता के साथ अपने व्यक्तित्व का उच्चतम विकास कर सके। इस प्रकार अराजकतावाद वह सिद्धान्त है, जिसके अनुसार राजनीतिक सत्ता को प्रत्येक रूप में अनावश्यक और अवांछनीय है। Prince Kropotkin के शब्दों में

"Anarchism is a theory of life and conduct under which society is conceived without government harmony in such a society being obtained not by submission to law or by obedience to any authority by free agreements concluded between the various groups territorial and proffessional constituted for the satisfaction of the infinit needs and aspiration of a civilized being."

यों राजनीतिक दर्शन में अराजकतावादी विचारधारा एक प्राचीन विचारधारा है। ईसा से कई शताब्दी पूर्व स्टोइक दर्शन में इसकी झलक मिलती है। आधुनिक युग में William Godwin पहला विचारक था

जिसने इस प्रकार की विचारधारा रखी। परन्तु सुव्यवस्थित रूप से इस विचारधारा को रखने का श्रेय प्रोधों (Proudhon) को है। Proudhon के पश्चात Michael Bakunin एवं Kropotkin ने इसे सुव्यवस्थित रूप से रखने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त इस विचारधारा की झलक Leo Tolstoy, Thoreau, Gandhi Warren, Sturner आदि के ~~[illegible]~~ विचारों में भी देखने को मिलती है।

अराजकतावादियों की प्रारम्भिक धारणा यह है कि मानव प्रकृति मूल रूप से दैवीय है तथा जि[illegible] प्राणी होने के नाते वह स्वभाव से ही सहयोगी है। यदि उसे योग्यता एवं रुचि के मुताबिक काम दिया जाय तो वह काफी परिश्रम एवं मन से कार्य कर सकता है परन्तु वह राज्य, पूंजीवाद एवं धर्म के बन्धनों से इस तरह जकड़ा हुआ है कि वह अपने स्वभाव के अनुसार स्वेच्छा से नैतिक चेतना के प्रकाश में काम नहीं कर पाता अतः अराजकतावादियों की यह मान्यता है कि यदि उन्हें इनसे मुक्त कर दिया जाय तो उसका दैवीय स्वरूप पुनः निखर उठेगा और वे अपना उच्चतर विकास कर सकेंगे।

अराजकतावादियों ने राज्य पर जबरदस्त प्रहार किया है। उनके अनुसार राज्य एक आवश्यक बुराई है क्योंकि वह दमन और शोषण का एक यंत्र है और यह इसलिए समस्त सामाजिक और नैतिक बुराइयों की जड़ है इसलिए मानव सम्बन्धों में पूर्ण न्याय की स्थापना करने के लिए यह आवश्यक है कि राज्य को समूल नष्ट कर दिया जाय और उसके स्थान पर एक स्वतंत्र समाज का संगठन किया जाय। Russel के शब्दों में "अराजकतावाद एक ऐसा सिद्धान्त है जो प्रत्येक प्रकार की शक्ति पर आधारित सरकार का विरोध करता है। अराजकतावादियों का प्रमुख लक्ष्य स्वतंत्रता है और जिसकी प्राप्ति समाज द्वारा व्यक्ति पर शक्ति द्वारा किये गये किसी भी प्रकार के नियंत्रण का उन्मूलन करती जाती है।"

अराजकतावादियों ने विशेषकर Kropotkin ने ऐतिहासिक आधार पर राज्य की आलोचना की है उनका मत है कि राज्य की उत्पत्ति बाद में हुई है।

इसकी उत्पत्ति के पूर्व मनुष्य समूह बनाकर स्वतंत्र एवं सुखी जीवन व्यतीत करते थे राज्य के होने से मनुष्य परतंत्र एवं दुखी बन गया और फिर राज्य वस्तुतः कोई नया सुधार नहीं करता, बल्कि परम्परागत रुढ़ियों एवं प्रथाओं पर कानून की मुहर लगा देता है। इस प्रकार ऐतिहासिक आधार पर भी कहा जा सकता है कि राज्य कोई अनिवार्य संस्था नहीं है।

अराजकतावादियों ने राज्य की आलोचना नैतिक आधार पर भी की है। राज्य की शक्ति का बड़ा बुरा प्रभाव शासक एवं शासित दोनों पर पड़ता है। Bakunin के शब्दों में,

"............ power corrupts those who wield it much as those who are forced to obey it."

अराजकतावादियों के अनुसार राज्य की कोई उपयोगिता नहीं है। राज्य के कानून मानव-स्वतंत्रता का शत्रु है। राज्य का वास्तविक आधार शक्ति है, इच्छा नहीं। राज्य का जनतंत्रात्मक रूप भी एक भ्रम है। जनतंत्रात्मक व्यवस्था प्रतिनिधित्व पर आधारित है। पर वास्तविकता तो यह है कि कोई मनुष्य किसी मनुष्य का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता।

अराजकतावादियों ने तो यहाँ तक कहा है कि राज्य एक बेकार संस्था है। उसके अनुसार राज्य कोई भी ऐसा कार्य नहीं करता जो मनुष्य एवं ऐच्छिक समुदायों के द्वारा नहीं करते सकते। यहाँ तक कि राज्य से कहीं अच्छे ढंग से मनुष्य के ऐच्छिक समुदाय किसी भी कार्य को कर सकते हैं। अतएव राज्य एक बेकार संस्था

अन्त में अराजकतावादियों ने राज्य का विरोध आर्थिक आधार पर भी किया है। मार्क्सवादियों की तरह अराजकतावादी भी इसी बात में विश्वास करते कि राज्य का प्रादुर्भाव उस समय हुआ, जब समाज में दो वर्ग उत्पन्न हुए और ये वर्ग उस समय उत्पन्न हुए जब व्यक्तिगत सम्पत्ति का आविर्भाव हुआ। इस प्रकार राज्य व्यक्तिगत सम्पत्ति के गर्भ से ही जन्म लेकर व्यक्तिगत सम्पत्ति को ही बढ़ावा देता रहा है यह वास्तव में पूँजीपति के शोषण का यंत्र है। अतएव यदि व्यक्तिगत सम्पत्ति नष्ट

Scanned with CamScanner

हो जाय तो न न्यायालयों की आवश्यकता रहेगी और कानून एवं व्यवस्था कोलिए राज्य की। इस प्रकार Kropotkin के शब्दों में,

"The State is without any natural or historical justification. It is opposed to man's naturally co-operative instinct."

अराजकतावादी व्यक्तिगत सम्पत्ति का विरोध करते हैं। साम्यवादियों की भाँति वे भी श्रम को ही मूल्य का आधार मानते हैं, अतएव उनका विचार है कि किसी वस्तु से जो लाभ होता है, वह श्रमिकों को मिलना चाहिए। Kropotkin के शब्दों में "व्यक्तिगत सम्पत्ति न तो न्यायपूर्ण है और न लाभदायक ही। सब कुछ सबका है, सब वस्तुएँ सब मनुष्यों के लिए हैं क्योंकि सबको इनकी आवश्यकता है। सब मनुष्यों ने मिलकर उनके उत्पादन के लिए कार्य किया है और इस बात का हिसाब लगाना असंभव है कि विश्व की सम्पत्ति के उत्पादन में किस व्यक्ति का कितना योगदान है।"

अराजकतावादी धर्म का विरोध करते हैं। उनकी मान्यता है कि धर्म के दबाव में आकर मनुष्य अपना विवेक खो बैठता है और साम्यवादी बन जाता है। धर्म राज्य और पूँजीवाद जैसे अन्यायपूर्ण संस्थाओं को प्रोत्साहन देता है। Mitchael Bakunin का कहना था कि ईश्वर घृणा करने योग्य है, क्योंकि वह मनुष्य के महान आदर्शों, स्वतंत्रता एवं समानता के प्रतिकूल है। उसने यहाँ तक कहा है कि ईश्वर की धारणा का जन्म विचारों के जड़ता के कारण हुआ। इस प्रकार अराजकतावादी मानते हैं कि न केवल राज्य या पूँजीवाद के अनिष्टकर के बल्कि धर्म के अनिष्टकर से मुक्त करना चाहते हैं।

अपने उद्देश्यों की स्थापना के दृष्टि से अराजकतावादियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है — विकासवादी अराजकतावादी तथा क्रान्तिकारी अराजकतावादी। Leo Tolstoy तथा विकासात्मक अराजकतावादियों का विचार है कि अराजकतावादी समाज की स्थापना शान्तिपूर्ण ढंग से होनी चाहिए, हिंसा के अन्य सभी साधनों को त्यागकर अन्य दोषपूर्ण संस्थाओं का इसके द्वारा धीरे-धीरे अन्त

दूसरी ओर बाकुनिन और क्रोपोटकिन जैसे अराजकतावादी क्रान्ति की आवश्यकता पर बल देते हैं। उनकी मान्यता है कि यों तो समाज स्वतः अराजकतावादी लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है, फिर भी इस प्रक्रिया से अराजकतावादी समाज की स्थापना में बहुत देर लगेगी, अतः इस धीमेपन को दूर करने के लिए क्रान्ति आवश्यक है।

अब यह भी प्रश्न उठता है कि राज्य का अंत होने के पश्चात किस प्रकार के समाज का संगठन अराजकतावादी करना चाहते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि मार्क्स की भाँति अराजकतावादियों ने भावी समाज की कोई रूपरेखा प्रस्तुत नहीं किया है। उनका विचार था कि अतीत और वर्तमान का जो कूड़ा-कड़कट जमा हो गया है उसे भस्म कर देना है। उसके बाद स्वयं लोग सहयोग एवं पारस्परिकता की भावना पर जैसा समाज चाहेंगे, बना लेंगे।

अराजकतावादियों के अनुसार ऐसे समाज में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्वैच्छिक संगठन होंगे। प्रत्येक व्यक्ति रुचि के अनुसार ऐसे संगठन का सदस्य होगा। वह अपनी शक्ति एवं इच्छानुसार काम करेगा एवं आवश्यकतानुसार वस्तुओं को प्राप्त करेगा। इस प्रकार इस समाज का आधार छोटे-छोटे संघ होंगे। ये छोटे-2 संघ आपस में मिलकर बड़े संघों का निर्माण करेंगे। विभिन्न समुदायों द्वारा उत्पादित वस्तुएँ सामूहिक सम्पत्ति होंगी और उनका वितरण नागरिकों में आवश्यकतानुसार किया जाएगा। इस समाज में विवादों का निर्णय स्वेच्छापूर्वक स्थापित पंच-न्यायालय करेंगे। इस प्रकार अराजकतावादी व्यवस्था में सर्वत्र शान्ति और व्यवस्था रहेगी। लेकिन [illegible]

अराजकतावाद की आलोचना कई आधार पर की जा सकती है। सबसे पहले तो उसकी मानव स्वभाव संबंधी धारणा ही भ्रामक है। यह कहना गलत है कि मनुष्य के स्वभाव का केवल दैवीय पक्ष होता है और उसमें जो दुर्गुण हैं, उसके लिए राज्य तथा कानून ही उत्तरदायी हैं। हाँ, यह ठीक है कि राज्य के कुछ दोषपूर्ण कानूनों के कारण व्यक्ति के साथ न्याय नहीं होता, परन्तु उसके सारे दुर्गुणों के लिए राज्य को जिम्मेवार नहीं ठहराया जा सकता। यहाँ तक कि अराजकतावादी विचारधारा में विरोधाभास भी देखने को मिलता है। एक ओर तो मानव अराजकतावादियों के अनुसार आलौकिक निःस्वार्थ, सहयोगी, प्रेम एवं सेवाभावी होता है

तो दूसरी ओर स्वार्थपूर्ण, दुराचारी एवं अत्याचारी हो सकता है

राज्य के स्वरूप के सम्बन्ध में भी अराजकतावादियों का दृष्टिकोण त्रुटिपूर्ण है वे राज्य को केवल शक्ति और दमन का प्रतीक मानते हैं परन्तु उसके लोकहितकारी पक्ष की बिल्कुल ही अवहेलना कर देते हैं इतिहास इस बात का साक्षी है कि राज्य के तत्वाधान में प्रगति हुई है अतएव राज्य को बिल्कुल हानिकारक संस्था मानना गलत है

अराजकतावादियों की यह भी धारणा है कि राज्य के कानूनों से स्वतंत्रता सीमित होती है, कुछ अंशों में यह बात सही है कि कानूनों से व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित हुई है परन्तु इन्हें स्वभाव से ही एक दूसरे का वैरी मानना वास्तव में गलत है रिची ने ठीक ही कहा है कि "we are bound in order to be free."

अराजकतावादियों ने भावी समाज की जो रूप रेखा प्रस्तुत की है, वह वास्तव में एक सुन्दर कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है अराजकतावादी समाज का मुख्य आधार मनुष्य के ऐच्छिक समुदाय होंगे। व्यवहारिक अनुभव हमें यही बताता है कि इन समुदायों के द्वारा भी अल्पसंख्यक समुदायों का दमन और शोषण ही होता है साथ ही यह संभव है कि ये समुदाय परस्पर विरोधी दिशा में कार्य करें।

अराजकतावादी व्यक्ति की नैतिक चेतना पर इतना अधिक भरोसा करते हैं कि उन्होंने इस पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया कि उस चेतना को व्यक्तिगत स्वार्थ की लिप्सा से दूषित होने से कैसे रोका जाय। अन्त में

अन्त में यह भी कहा जा सकता है कि राज्य के अभाव में बाह्य आक्रमणों से देश की रक्षा कैसे होगी एवं किसी भी प्रकार की अधिकार सत्ता के अभाव में उत्पादित वस्तुओं का बीच आवश्यकतानुसार वितरण एक ख्याली पुलाव है।

→ इस प्रकार स्पष्ट है कि राज्य की आलोचना चाहे जितनी भी की जाय, यह सभ्य समाज की एक आवश्यकता है Russel ने ठीक ही कहा है कि "The State in some form, what ever may be said in criticism of its mistakes, its efficiency and its absence of power is and always will be an absolute necessity among civilised man"